।।कई दिना सूं।।

(तर्ज: चांद चढ्यो गिगनार)

कई दिना सूं डिकता या, फागुन की रुत आई जी।
मीठी मीठी भाल बसंती, को संदेशों ल्यायी जी।
फागण का दिन चार, भगतों, हो जाओ तैयार,
आयो होली रो त्यौहार, सांवरो आवेलो जी आवेलो।

श्याम धनी दातार बावो, खाटू रो सिरदारबाबो,
हो लीले असवार, सांवरो आवेलो जी आवेलो।

जद सु थारी सूरत देखी, राता नींद गंवाई जी।
सज धज कर सिंहासन बैठया, म्हारे काई समाई जी।
चमक रहयो दरबार थारो, फुला रो सिंगार,
थारो सूरत कामनगार, सांवरो आवेलो जी आवेलो।

फागणियो रंगीलो महीनो, सेवक चंग बजावे जी।
मंदिर माही घुमर चाले, मीठा भजन सुनावे जी।
उड़ रहयो रंग गुलाल, हो रही इतर की बौछार,
देखो हो रही जय जयकार, सांवरो आवेलो जी आवेलो।

Downloaded from khatunareshshyambaba.in
Website design & developed by syllogisticinoftech.com